Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.P.S. - 1

राजनीतिक सिद्धांत

(Political Theory)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Mamta Goel,* Ph.D. Political Science

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 400/-

Content

राजनीतिक सिद्धांत

(Political Theory)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1

Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1

Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2018 (Solved) 1

Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2

Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2

Question Paper—June, 2017 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1.	राजनीति-सिद्धांत क्या है; इसका अध्ययन क्यों करें? (What is Political Theory and Why Study it?)	1
2.	लोकतंत्र (Democracy)	12
3.	अधिकार (Rights)	19
4.	स्वतंत्रता (Liberty)	26
5.	समानता (Equality)	31
6.	न्याय (Justice)	43
7.	कर्त्तव्य बोध (Idea of Duty)	49
8.	नागरिकता (Citizenship)	56

9. सम्प्रभुता (Sovereignty) 64

10. राज्य और नागरिक समाज (State and Civil Society) 76

11. सत्ता और प्राधिकार (Power and Authority) 84

12. वैधीकरण और बाध्यीकरण (Legitimation and Obligation) 90

13. सविनय अवज्ञा और सत्याग्रह (Civil Disobedience and Satyagrah) 98

14. राजनीतिक हिंसा (Political Violence) 105

15. क्लासिकी उदारवाद (Classical Liberalism) 116

16. कल्याणकारी राज्य (Welfare State) 126

17. स्वतंत्रतावाद (Libertarianism) 139

18. मार्क्सवाद–I : मार्क्स, लेनिन, माओ (Marxism–I : Marx, Lenin, Mao) 150

19. मार्क्सवाद–II : लुकाक्स, ग्राम्सी और फ्रैंकफर्ट स्कूल 160
(Marxism–II : Lukacs, Gramsci, Frankfurt School)

20. समाजवाद (Socialism) 167

21. रूढ़िवाद (Conservatism) 175

22. कट्टरतावाद (Fundamentalism) 184

23. राष्ट्रवाद (Nationalism) 191

24. बहुसांस्कृतिकवाद (Multi-Culturalism) 203

25. फासीवाद (Fascism) 211

26. नारीवाद (Feminism) 217

27. गाँधीवाद तथा शान्तिवाद (Gandhism and Pacifism) 228

28. जनसमुदाय तथा नागरिक गणतंत्रवाद 235
(Communitarianism and Civic Republicanism)

29. भूमण्डलीकृत विश्व में राजनीतिक सिद्धांत 244
(Political Theory in a Globalising World)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

राजनीतिक सिद्धान्त
(Political Theory)

M.P.S.-1

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम* ***दो*** *प्रश्न चुनिए। सभी प्रश्नों के अंक* ***समान*** *हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. उदारवाद क्या है? विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-116, 'उदारवाद क्या है?', पृष्ठ-117, 'उदारवाद की विशेषताएँ'

प्रश्न 2. उदार लोकतांत्रिक राज्य पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-128, 'उदारवादी लोकतांत्रिक-कल्याणकारी राज्य'

प्रश्न 3. स्वतंत्रतावाद पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-17, पृष्ठ-139, 'स्वतंत्रतावाद क्या है?'

प्रश्न 4. वर्ग युद्ध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-152, 'वर्ग युद्ध'

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पर जॉर्ज लुकाक्स

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-19, पृष्ठ-160, 'द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का खंडन'

(ख) समाजवाद का अर्थ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-20, पृष्ठ-168, 'समाजवाद : अर्थ तथा आरंभिक रूप'

भाग-II

प्रश्न 6. रूढ़िवादिता से आप क्या समझते हैं? विस्तार से समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-21, पृष्ठ-175, 'रूढ़िवाद का अर्थ', पृष्ठ-176, 'रूढ़िवाद अवधारणा के विभिन्न प्रयोग'

पश्न 7. कट्टरवाद की बुनियादी विशेषताओं को गिनाइए और उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-22, पृष्ठ-185, 'कट्टरवाद के मूल लक्षण'

प्रश्न 8. राष्ट्रवाद पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-23, पृष्ठ-191, 'परिचय', 'राष्ट्रवाद क्या है?'

प्रश्न 9. बहुसंस्कृतिवाद की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-24, पृष्ठ-203, 'बहुसांस्कृतिकवाद की अवधारणा'

प्रश्न 10. फासीवाद पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-25, पृष्ठ-211, 'परिचय', 'फासीवाद-अर्थ एवं एक विचारमूलक चित्र', 'फासीवादी विश्व दृष्टिकोण'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

राजनीतिक सिद्धान्त

(Political Theory)

M.P.S.-1

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग में से कम-से-कम* ***दो*** *प्रश्न चुनिए। सभी प्रश्नों के अंक* ***समान*** *हैं।*

भाग - I

प्रश्न 1. आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त'

प्रश्न 2. लोकतंत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का पता लगाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'ऐतिहासिक पृष्ठभूमि'

प्रश्न 3. अधिकारों के अर्थ पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-19, 'अधिकार : अर्थ और प्रकृति', 'अधिकारों का अर्थ'

प्रश्न 4. सकारात्मक या नकारात्मक स्वतंत्रता पर विस्तृत चर्चा कीजिए।

उत्तर–नकारात्मक स्वतंत्रता–बर्लिन ने स्वतंत्रता को स्वतंत्र होने या दूसरों द्वारा हस्तक्षेपित न होने के रूप में परिभाषित किया है। उनके अनुसार अहस्तक्षेप का क्षेत्र जितना विस्तृत होगा, उतनी ही विस्तृत स्वतंत्रता होगी अर्थात् हस्तक्षेप स्वतंत्रता को सीमित करता है। हॉब्स के अनुसार, एक स्वतंत्र व्यक्ति वह है, जो अपनी शक्ति का बुद्धिमानी से हर वह कार्य करने में सक्षम है, जिन्हें करने की वह इच्छा रखता है। प्राकृत अवस्था में कानूनों का अभाव था, इसलिए व्यक्तियों ने दूसरों की स्वतंत्रता के प्रति एक रुकावट के रूप में कार्य किया। निरंकुश शासक अकेले स्वयं ही कानून बनाता था। कोई व्यक्ति स्वतंत्र है अथवा नहीं, इस बात का पता तब चलता, जब यह मालूम होता कि उन कानूनों में उसे बोलने का कोई अधिकार है या नहीं। मुझ पर कौन शासन करता है? इस प्रश्न का उत्तर तार्किक रूप में इस बात से अलग है कि सरकार मेरे कार्यों में कहाँ तक हस्तक्षेप करती है। बर्लिन के विचारों में नकारात्मक स्वतंत्रता सिद्धांतत: नियंत्रण क्षेत्र से संबंधित है।

स्वतंत्रता की संकल्पना को समझाते हुए हॉब्स ने स्वतंत्रता एवं योग्यता के बीच अन्तर बताया। पंछी के यदि पंख न हों, तो वह उड़ नहीं सकेगा। यह उड़ने की योग्यता का अभाव है, यद्यपि यह पक्षी उड़ने के लिए स्वतंत्र है। इसी प्रकार मानव के मामले में भी योग्यता और स्वतंत्रता में स्पष्ट भिन्नता है। नकारात्मक स्वतंत्रता के व्याख्याता शक्ति एवं योग्यता की इस भिन्नता का समर्थन करते हैं। कुछ लोगों के पास भौतिक संसाधनों एवं सुविधाओं की प्रचुरता है, तो कुछ के पास इनका अभाव है। जिस समाज के अंतर्गत स्वतंत्रता का अस्तित्व शक्ति पर निर्धारित हो, वहां निर्बलों का कोई जीवन नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ स्वाभाविक शक्तियाँ होती हैं। राज्य का कर्तव्य है कि वह नागरिकों की इन शक्तियों के विकास हेतु पूर्ण अवसर प्रदान करे, क्योंकि सामूहिक हित में स्वतंत्रता को सीमित करना अत्यंत आवश्यक है। किन्तु मिल के अनुसार व्यक्ति के उन कार्यों पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए, जिनका संबंध केवल उनके ही अस्तित्व में हो। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए **मिल** कहते हैं, "मानव समाज को केवल आत्मरक्षा के उद्देश्य से ही, किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता में व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से हस्तक्षेप करने का अधिकार हो सकता है। अपने ऊपर, शरीर, मस्तिष्क और आत्मा पर व्यक्ति सम्प्रभु है।"

यद्यपि इसमें संदेह नहीं है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्मान किया जाना चाहिए। लेकिन वर्तमान समय में जटिल सामाजिक जीवन के कारण व्यक्ति के कौन-से कार्य स्वयं उससे ही संबंधित हैं, यह कहना कठिन है। अनेकों बार ऐसा भी होता है जब सार्वजनिक स्वास्थ्य, शालीनता और व्यवस्था के हित में व्यक्ति की भोजन संबंधी, वस्त्र संबंधी और धार्मिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करना पड़े। अंततोगत्वा सामाजिक विचारधारा का आधार यह है कि व्यक्ति के सभी कार्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाज पर प्रभाव डालते हैं। अत: समाज के पास इन कार्यों को सीमित या प्रतिबंधित करने की शक्ति होनी चाहिए। मिल के अनुसार सामाजिक सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य मानव को सुधार के लिए प्रोत्साहन देना है। वैयक्तिक स्वतंत्रता इस सुधार के लिए एक उत्तम एवं अनिवार्य साधन है। सुधार का अचूक एवं स्थायी स्रोत स्वतंत्रता ही है, क्योंकि वैयक्तिक स्वतंत्रता के आधार पर जितने व्यक्ति होंगे, उतने ही स्वतंत्र केन्द्र संभव होंगे।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

राजनीतिक सिद्धांत
(POLITICAL THEORY)

राजनीति-सिद्धांत क्या है; इसका अध्ययन क्यों करें?
(What is Political Theory and Why Study It?)

1

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

प्रस्तावना

''राजनीतिक सिद्धांत राजनीति विज्ञान का एक अत्यंत अनियंत्रित उपक्षेत्र है।'' **–वासबी**

राजनीतिक सिद्धांत मात्र एक परिकल्पना न होकर राजनीति विज्ञान, नीति एवं तत्त्वज्ञान का भावपूर्ण चिन्तन है। राजनीति-सिद्धांत का प्रयोग परम्परागत रूप में राजनीतिक विचारों के इतिहास हेतु किया जाता है, जबकि आधुनिक रूप में यह राजनीतिक व्यवहार के व्यवस्थित अध्ययन के लिए किया जाता है। **मोरिस दुबर्जर** के शब्दों में, *''यह अवलोकन, प्रयोग और तुलना के परिणामों को एकरस बनाता है तथा घटनाओं के समूह के अन्तर्गत समझी व पहचानी जाने वाली सामग्री को क्रमबद्ध व समन्वित ढंग से अभिव्यक्त करता है।''*

राजनीति विज्ञान का अध्ययन केवल राजनीतिक क्रियाकलाप ही नहीं, वरन् सभी राजनीतिक गतिविधियों, लोगों की निरंतर आवश्यकताओं, सभ्य मानव जाति की प्रगति का आवश्यक उपकरण है। राजनीतिक सिद्धांत एक सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्था लाने के निष्पक्ष एवं स्पष्ट उद्देश्य के लिए कल्पना के रूप में, विज्ञान के आधार पर एवं तत्त्वज्ञान के साथ सम्यक् रूप से परिवर्तनशील है।

राजनीति सिद्धांत क्या है?

राजनीतिक सिद्धांत 'राजनीति' और 'सिद्धांत' दो शब्दों से मिलकर बना है। राजनीति का आशय 'सत्ता' या 'शक्ति' तथा 'सिद्धांत' का आशय 'थ्योरी' से लगाया जाता है। 'पॉलिटिकल साइंस डिक्शनरी' में इस राजनीतिक सिद्धांत *"राजनीतिक विषय परिकल्पना है एवं राजनीति क्या है"*–इसका विज्ञान, राजनीति से सम्बंधित ज्ञान, राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन, विश्लेषण एवं राजनीतिक क्रियाकलापों के प्रक्रमों, परिणामों, नीतियों का निर्धारण आदि का औपचारिक, क्रमिक एवं तर्कसंगत विश्लेषण है। यह राजनीतिक आचरण व व्यवहार क्या होगा, से संबंधित है। **डेविड हैल्ड** के अनुसार–*"राजनीतिक जीवन विषयक संकल्पनाओं व सामान्यीकरणों का एक तंत्र है जिसमें सरकार, राज्य व समाज की प्रकृति, उद्देश्य व मुख्य अभिलक्षण विषयक तथा मनुष्यों की राजनीतिक क्षमताएँ विषयक विचार, कल्पनाएँ एवं उक्तियाँ होती हैं।"* वस्तुतः राजनीति-सिद्धांत सम्पूर्ण राजनीति-विषयक है। *"राजनीतिक"* जो कुछ भी नहीं है, उसे प्रतीक रूपों में प्रस्तुत करना व राजनीतिक व्यवहार का यथार्थ एवं व्यवस्थित अध्ययन ही राजनीतिक सिद्धांत है। यह राजनीति शास्त्र का आवश्यक अंग है।

www.neerajbooks.com

सिद्धांत क्या है?

सिद्धांत अंग्रेजी भाषा के थ्योरी (Theory) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। थ्योरी शब्द ग्रीक भाषा के थ्योरिया (Theoria) से लिया गया है–जिसका अर्थ है–"*समझनेकीदृष्टिसेचिन्तनावस्था में प्राप्त वह संकेन्द्रित मानसिक दृष्टि, जो सम्बंधित वस्तु अथवा विषयकेअस्तित्वऔरकारणकोप्रकटकरे।*" जिसमें तथ्यों, उनके स्पष्टीकरण, उसकी अवधारणा, मूल्य-निर्णयों तथा लक्ष्यों, नीतियों व आधारभूत कारणों का वर्णन होता है। वास्तव में सिद्धांत विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान दोनों ही की विशिष्टताओं का सम्मिलित सैट है। कोई भी कार्य करने हेतु पहले उस पर विचार किया जाता है। अत: सिद्धांत व्याख्या नहीं है, क्योंकि व्याख्या करना भी सोचने का एक हिस्सा मात्र है। सिद्धांत को पूर्णरूपेण तत्त्वज्ञान भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि तत्त्वज्ञान का क्षेत्र विशाल है। वह सम्पूर्ण है, तो सिद्धांत-आंशिक हिस्सा मात्र अवलोकन अथवा परीक्षण की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त निष्कर्ष सिद्धांत बनकर सदा के लिए नियमीकृत हो रहे हैं तथा उन सिद्धांतों को पुनर्निरीक्षत, पर्यवेक्षित या सत्यापित करने की आवश्यकता नहीं रहती। **कोहने** ने लिखा है–"*सिद्धांतशब्द एक कोरे चैक के समान है, जिसका संभावित मूल्य उपयोगकर्त्ता एवंउसकेउपयोगपरनिर्भरहै।*" सिद्धांत विचार के विषय में चिन्तन है, स्वयं पूर्ण विचार नहीं है। समग्र रूप में सिद्धान्त मार्गदर्शक है, जो किसी वर्णन को विस्तार रूप में प्रस्तुत करता है और कथन को स्पष्ट करता है।

राजनीति-सिद्धांत : निहितार्थ

राजनीति सिद्धांत को समझने के लिए उसे एक सिद्धांत, विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान के रूप में भी समझना होगा। राजनीति सिद्धांत किसी राजनीतिक घटना के विषय में हमें यह बताता है कि उस घटना विशेष में क्या हो रहा है, वह घटना क्यों घटी और इनका अवलोकन करके यह जानने में मदद करता है कि भविष्य में इस प्रकार की घटनाएँ कब और कैसे हो सकती हैं। साथ ही हमारे समक्ष विभिन्न राजनीतिक विकल्पों को खोलने का एक साधन भी है। जब राजनीतिक सिद्धांत अपने कार्य का सफल निष्पादन करता है, तो वह मानवता के विकास का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

राजनीतिक सिद्धांत के लाक्षणिक निहितार्थ एवं मुख्य पहलू–(1) राजनीतिक सिद्धांत का कार्यक्षेत्र नागरिकों के राजनीतिक जीवन, राजनीतिक विचार, राजनीतिक व्यवहार तक फैला हुआ है।

(2) राजनीतिक घटनाओं के वर्णन, समालोचना एवं खोज की पद्धतियाँ।

(3) राजनीति क्या है? उसे सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि के सम्बन्ध में समझाने का प्रयास।

(4) राजनीति-सिद्धांत को प्राप्त करने का लक्ष्य एक अच्छे समाज में एक अच्छे राज्य का निर्माण करना है।

(5) राजनीति-सिद्धांत विभिन्न राजनीतिक घटनाक्रमों की व्याख्या, अवलोकन, विश्लेषण एवं पूर्वानुमान करने के साथ मानवीय व्यवहार के अनुरूप विभिन्न सुझाव भी प्रस्तुत करता है।

राजनीति-सिद्धांत : अन्तर्वस्तु

राजनीति सिद्धांत की विषय-वस्तु समय-समय पर बदलती रही है क्योंकि यह मुख्यत: 'राजनीति' के संघटक कारकों का क्रमबद्ध, अनुशासित अन्वेषण है। इस रूप में यह विभिन्न राजनीतिक घटनाओं, सरकार की संस्थाओं अर्थात् पूर्ण राजनीतिक प्रणाली की निकटता से संबंधित है। वर्तमान में राजनीति-सिद्धांत के अंतर्गत अनेक व्यवस्थाओं का, जो कि राजनीतिक भी नहीं हैं अर्थात् बहुत-से सामाजिक विज्ञानों का एकीकरण, समन्वय भी इसके अन्तर्गत आता है। राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन के अन्तर्गत विषय-वस्तु सीमित नहीं है। इसका कार्यक्षेत्र राजनीति की परिधि के भीतर ही नहीं, अपितु इसके बाहर भी बहुत कुछ है। राजनीति की परिभाषा सतत् चलने वाला कार्यकलाप है। इसकी विषय-वस्तु व्यापक है। "*राजनीतिकसिद्धांतमात्रराज्य,स्वतंत्रता,प्रभुसत्ताएवं शासन का ही अध्ययन नहीं करता, अपितु वह राज्य के अध्ययन के साथ-साथ सरकार व प्रभुसत्ता के अध्ययन का भी समावेश कर लेता है।*"

'इन्टरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल सांइस' में अर्नल्डि ब्रैख्त ने राजनीतिक सिद्धांत में अन्तर्वस्तु में निम्नलिखित इकाइयों को शामिल किया है–समूह, सन्तुलन, शान्ति, शक्ति-नियंत्रण एवं प्रभाव, क्रिया, अभिजन चयन एवं विनिश्चय प्रक्रिया, पूर्वभाषित प्रक्रिया और कार्य।

राजनैतिक सिद्धांत के प्रमुख विषय राजनीतिक मनुष्य व उसका व्यवहार, विचारवाद, मूल्य, अर्थशास्त्र, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, समूह संस्थाएँ, प्रशासन, सैन्य विज्ञान एवं शोध पद्धतियाँ आदि हैं। राजनैतिक सिद्धांत के वास्तविक दृष्टिकोण के अन्तर्गत निम्नलिखित का अध्ययन किया जाता है:

***(i)* राज्य एवं सरकार**–इस कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत प्रशासनिक कार्यक्रम सामाजिक कल्याण, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सहयोग संबंधी नीतियां एवं विचारधाराएं भी आती हैं। परन्तु मुख्य विषय में राज्य के आधुनिक स्वरूप, आकार-प्रकार एवं शासन प्रणाली के व्यावहारिक आधारभूत सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन किया जाता है।

***(ii)* शक्ति प्रक्रिया का ज्ञान**–राजनीतिक शक्तियाँ, उनका स्वरूप एवं उनके आपसी संबंधों का अध्ययन। शक्ति के अन्य रूप जैसे लोकमत की शक्ति, सामाजिक शक्ति, आर्थिक शक्ति, राष्ट्रीय शक्ति एवं अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति आदि का अध्ययन।

***(iii)* शक्ति नियंत्रण प्रक्रिया**–यह प्रक्रिया सकारात्मक एवं नकारात्मक होती है। या तो यह प्रक्रिया किसी कार्य की सम्पन्नता के लिए अथवा उसको रोकने के लिए होती है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(iv) **मानवीय व्यवहार**–राजनीति संबंधी क्रियाकलापों तथा इन्हें प्रेरणा प्रदान करने वाले तत्त्वों के साथ मानवीय व्यवहार का भी अध्ययन किया जाता है।

(v) **नीति-निर्माण प्रक्रिया**–राजनीतिक जीवन में किसी विशेष नीति के निर्धारण में सहायक गतिविधियां तथा नीति के क्रियान्वन को प्रभावित करने वाली गतिविधियों का भी अध्ययन किया जाता है।

राजनीति-सिद्धांत की प्रकृति

वस्तुत: राजनीति-सिद्धान्त को राजनीतिक-विचार कहा जाता है। परन्तु कुछ इसे राजनीतिक दर्शन के समकक्ष मानते हैं। यद्यपि दर्शन समग्र रूप है जबकि राजनीति-सिद्धांत उसका एक हिस्सा मात्र ही है। राजनीति-सिद्धांत को विज्ञान रूप में मानने वाले ठोस दलीलें देते हुए उसे वैज्ञानिक पद्धति से ही अध्ययन करने योग्य मानते हैं। परन्तु राजनीति-सिद्धांत इन सीमाओं से बाधित नहीं है। पूर्णरूपेण इसे इतिहास भी नहीं माना जा सकता, क्योंकि राजनीति का कोई ठोस इतिहास या विशेष संस्कृति नहीं थी। यह सतत् परिवर्तनशील एवं वृहद है। अस्तु, राजनीति-सिद्धांत की प्रकृति इतिहास, दर्शन एवं विज्ञान सभी की परिधि में में आती है।

राजनीति-सिद्धांत आंशिक इतिहास है, आंशिक दर्शन तथा विज्ञान भी है।

इतिहास के रूप में राजनीतिक सिद्धांत–इतिहास में व्यक्ति, समाज और राज्य के भूतकालीन जीवन का लेखा-जोखा होता है और राजनीति सिद्धांत में राज्य के भूत, वर्तमान एवं भविष्य का अध्ययन किया जाता है। अत: स्वाभाविक रूप से ये दोनों एक-दूसरे से बहुत अधिक सम्बन्धित हैं। राजनीतिक सिद्धांत के बिना इतिहास बिना नींव की इमारत है। इतिहास केवल ऐतिहासिक घटनाओं, जन्म-मरण का लेखा-जोखा मात्र न होकर अनुभव व ज्ञान का, प्राप्त-अप्राप्त का तथा सफलताओं एवं विफलताओं के ज्ञान का कोष है। इस प्रकार इतिहास के रूप में राजनीति सिद्धांत अपनी उपयोगिता खो चुके मसलों को चुनौती देता है। यह महत्त्वपूर्ण का सरंक्षण करता है एवं भावी पीढ़ी को इसका पोषण करने में सहायक रहता है। न तो इतिहास पूर्णरूपेण राजनीति-सिद्धांत है और न ही राजनीतिक सिद्धांत पूर्णरूपेण इतिहास है। परन्तु यह निश्चित है कि इतिहास से विलग होकर यह अपना निजी महत्त्व खो देता है। जिस प्रकार पेड़ के बिना फल नहीं, उसी प्रकार इतिहास बिना राजनीतिक सिद्धांत भी नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत काल, स्थान एवं परिस्थितियों को समझने का प्रयास करता है–इस अर्थ में यह इतिहास है। राजनीतिक विज्ञान में जिन समस्याओं का अध्ययन किया जाता है, उनका भी अपना इतिहास होता है और इतिहास से परिचित हुए बिना समस्याओं को समझना व हल करना कठिन है। ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर वर्तमान राजनीतिक जीवन में सुधार करते हुए भविष्य के लिए मार्ग निश्चित किया जा सकता है। निष्कर्षत: इतिहास तथा राजनीति विज्ञान में अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। वे पारस्परिक रूप में इतने जुड़े हुए हैं कि उनके वृत्त क्षेत्र कहीं एक-दूसरे को छूते हैं और कहीं एक दूसरे का अतिक्रमण करते हैं, फिर भी दोनों विषय पृथक्-पृथक् हैं।

दर्शन के रूप में राजनीतिक सिद्धांत–दर्शनशास्त्र का अर्थ है सूक्ष्म विवरण। अत: किसी विषय पर सूक्ष्म विवरण दर्शन है। संसार के समस्त आदर्श, मानक एवं मूल्य दर्शन में ही समाए हुए हैं। अत: राजनीति सिद्धांत का भी दर्शन के बिना कोई अस्तित्व नहीं है। **स्ट्रॉस** ने लिखा है कि *"राजनीतिदर्शनशास्त्रकाएकअंग है। दर्शनशास्त्र शाश्वत् ज्ञान अथवा 'समग्र' की खोज में लगा रहता है। इसी प्रकार राजनीतिक दर्शन राजनीतिक तथ्यों की प्रकृति एवं उपयुक्तऔरउत्तमराजनीतिकव्यवस्थाकीखोजकरताहै।"* जिस प्रकार वर्तमान का अतीत के बिना अध्ययन कठिन है, ठीक उसी प्रकार भविष्य का विचार किए बिना वर्तमान का भी अस्तित्व नहीं है। दर्शन किसी कर्म या विचार का मूल्यांकन करता है, इस प्रकार यह बुद्धि के लिए खोज है। जब कोई मत या अभिधारणा ज्ञान की ऊँचाइयों को छूती है, तब दर्शन प्रकट होता है। वास्तव में यह ही राजनीति-सिद्धांत है।

अन्तर–राजनीतिक दर्शन वास्तव में राजनीतिक विषयों की प्रकृति अथवा स्वरूप के सम्बन्ध में धारणाओं के स्थान पर ज्ञान का समावेश करता है। दार्शनिक चिन्तन सम्पूर्ण वास्तविकता पर विश्वास रखता है। दर्शन वस्तु के वर्तमान स्वरूप का केवल वर्णन ही नहीं करता, वरन् उसका व्यापक, पूर्ण, शाश्वत् तथा सार्वभौमिक आधार भी प्रस्तुत करता है। यह कलात्मक एवं आदर्शवादी है। राजनीति सिद्धांत पूर्णत: दर्शन तो नहीं, परन्तु उसका एक अभिन्न भाग अवश्य है।

विज्ञान के रूप में राजनीतिक सिद्धांत–राजनीति सिद्धांत एक विज्ञान है, परन्तु जिस प्रकार समग्र विज्ञान राजनीति सिद्धांत नहीं है, उसी प्रकार राजनीति सिद्धांत भी समग्र रूप से विज्ञान नहीं है। विज्ञान में प्राकृतिक एवं भौतिक अवधारणाएँ होती हैं। परन्तु राजनीति सिद्धांत में न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत जैसा शाश्वत् सिद्धांत नहीं होता, प्रयोगशालाएं भी नहीं होतीं एवं न ही पूर्वानुमान लगाए जाते हैं।

विज्ञान निम्नलिखित चरणों में अध्ययन करता है :

(1) समस्या का विश्लेषण
(2) उपकल्पना का सृजन
(3) प्रयोगीकरण व पर्यवेक्षण
(4) तथ्य संकलन
(5) तथ्यों का वर्गीकरण तथा विश्लेषण
(6) सामान्यीकरण अथवा नियमीकरण

राजनीति सिद्धांत एक ऐसा विज्ञान है जो बुद्धिवाद की आवश्यकताओं को पूरा करता है, क्योंकि ये प्रेक्षणीय व परीक्षणीय हैं। इसमें यथार्थ विज्ञानों के जैसे नियम, सीमाओं के अन्दर सामाजिक जन-समूह पर प्रयोग होते हैं, उनका अध्ययन भी होता है एवं इनके आधार पर निष्कर्ष भी निकाले जाते हैं, जो विज्ञान की

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

किसी भी सामान्य परिभाषा के साथ चलते हैं। यद्यपि सामाजिक नियमों की अपनी सीमाएं होती हैं और ये समय के साथ-साथ परिवर्तित होते हैं, जबकि भौतिक विज्ञान के नियम समय के साथ नहीं बदलते। लेकिन फिर भी भौतिक घटनाओं के समान ही मानवीय व्यवहार में भी कुछ ऐसे सम्बन्धों का पता अवश्य ही लग जाता है तथा इन सम्बन्धों के ज्ञान से मानवीय व्यवहार के सम्बन्ध में कुछ पूर्व-कल्पना एवं उसका नियन्त्रण करना भी सम्भव है।

सामाजिक प्राधार पूर्ण रूपेण स्थाई न होकर अपेक्षाकृत रूप से स्थाई हो सकते हैं। यहीं कोई भी सामाजिक विज्ञान प्राकृतिक विज्ञान से समानता रखते हुए भी उससे भिन्न होता है।

राजनीति-सिद्धांत : विकास व उत्पत्ति

पश्चिमी देशों में राजनीति सिद्धांत अनेक चरणों से गुजर चुका है। प्लेटो व अरस्तू दोनों ही न्यायशीलता स्थापित करने या व्यक्ति को श्रेष्ठ जीवन प्रदान करने के लिए राज्य के प्रकार्यों पर जोर देते हैं। मध्यकालीन राजनीति सिद्धांत में धर्म का समावेश था, क्योंकि ईश्वर के पास स्थान पाने के लिए यह राज्य से श्रेष्ठ व्यक्ति को तैयार करने एवं उसे प्रशिक्षित करने की माँग करता था। आरंभिक युग में राजनीति सिद्धांत ने राज्य की उत्पत्ति से सम्बन्धित विभिन्न कल्पनाओं पर विचार-विमर्श करने का प्रयास किया। बीसवीं शताब्दी-मध्य का राजनीति सिद्धांत सत्ता की संकल्पना को राज्य का मूल विषय बताता था। इस प्रकार वह राज्य की संस्थाओं से वास्ता रखता था।

राजनीतिक सिद्धांत के विकास को ऐतिहासिक दृष्टि से तीन कालों में बाँटा जा सकता है :

(1) प्रारम्भिक से 19वीं शताब्दी तक का काल–इस प्रारम्भिक काल में राजनीतिक सिद्धांत के प्रारम्भ से 19वीं शताब्दी तक के काल को रखा जाता है तथा इसे परम्परावादी काल की संज्ञा दी जाती है। इस काल में राजनीतिज्ञों-दार्शनिकों का यह प्रयत्न था कि वे अपने विचारानुकूल सिद्धांत निर्माण करें तथा उन सिद्धांतों का जनता से पालन करवाने का प्रयत्न किया जाए।

(2) द्वितीय विश्व-युद्ध से 20वीं शताब्दी तक का काल–यद्यपि इस काल पर भी परम्परावादियों का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ था, परन्तु इस युग के राजनीतिशास्त्रियों में व्यवहार-वादियों, अनुभववादियों तथा यथार्थवादियों का प्रभाव भी अधिक रहा था। ये राजनीति-वैज्ञानिक राजनीतिक-घटनाओं के यथातथ्यवादी वर्णन तथा उनमें प्रयोग के लिए आनुभाविक पद्धतियों तथा समाजशास्त्रीय शोध रीतियों का प्रयोग करने लगे।

(3) द्वितीय विश्व-युद्धोत्तर काल–द्वितीय विश्व-युद्ध के उपरान्त आरम्भ हुए काल में राजनीति सिद्धांत निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि आगामी कुछ शताब्दियों में सिद्धांत निर्माण की प्रक्रिया से राजनीति विज्ञान अभिभूत रहेगा।

व्यापक राजनीति सिद्धांत–राजनीतिक सिद्धांत किसी भी युग में एक नहीं रहा, वरन् जितने विचारक-दार्शनिक रहे हैं, उतने ही सिद्धांत प्रचलित रहे। व्यापक राजनीति सिद्धांत के विचारक सिद्धांत को चिन्तन, परम्परा, दर्शन तथा विचारवाद आदि के रूप में स्वीकारते हैं। प्राचीन यूनानी सभ्यता से 19वीं सदी के आरम्भ तक व्यापक राजनीति सिद्धांत जारी रहा। **शैल्डन वॉलिन** के अनुसार राजनीति सिद्धांत इस प्रकार है :

(1) व्यापक राजनीति सिद्धांत एक मीमांसात्मक अनुसरण है जो प्रजा से सम्बन्धित विषयों पर जानकारी देने के साथ उनका बौद्धिक आधार भी स्थापित करता है।

(2) राजनीति सिद्धांत ने साधारण जनता के साथ राजनीति को पहचानने का प्रयास किया।

(3) इसके मुख्य विषय कार्यकलाप, सम्बन्ध एवं विश्वास से सम्बन्धित थे।

(4) व्यापक राजनीति सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य व्यवस्था, संतुलन, सामंजस्य एवं साम्य पर बल देना था। इस कारण इसे अनेकों संघर्षों एवं अस्थिरताओं को भी पार करना पड़ा।

(5) व्यापक राजनीति सिद्धांत ने विभिन्न राजनीतिक स्वरूपों के वर्गीकरण एवं उनके तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया।

(6) मोटे तौर पर व्यापक राजनीति सिद्धांत नीतिशास्त्र का ही रूप था। अतः इसकी प्रतिक्रिया भी प्राचीन विचारकों ने नैतिक दृष्टिकोण के रूप में व्यक्त की।

(7) व्यापक राजनीतिक सिद्धांत ने मूल्यों पर बल दिया, जिससे परिस्थितियों के विशेष वर्गों का सर्वोत्तम रूप तय किया जा सके।

(8) व्यापक राजनीति सिद्धांत के विचारक प्लैटो ने आदर्श राज्य की और ऑगस्टीन ने ईश्वरीय नगर की कल्पना की।

(9) व्यापक राजनीतिक सिद्धांत ने आदर्श रूप में राजतंत्र के सबसे अच्छे रूप को प्रधानता देते हुए परिवर्तनवाद को भी महत्त्व दिया। व्यापक राजनैतिक सिद्धांत आदर्शवादी, नैतिक, मीमांसात्मक एवं व्याख्यात्मक था।

आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत

आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत अनेक विविधताएं लिए हुए है और अभी भी विकासशील अवस्था में है। यह दो वर्गों में विभाजित है :

(क) उदारवादी–यह परम्परागत है जिसका व्यक्तिवाद, बहुवाद एवं संभ्रांत वर्गवाद से संबंध है।

(ख) मार्क्सवादी–यह आधुनिक विचारधाराओं से संबद्ध है जिसमें द्वंद्वात्मक-भौतिकवाद आदि आते हैं।

आधुनिक राजनैतिक सिद्धांत बीते की छोड़, जो अब है उस पर ध्यान केन्द्रित करता है। इस प्रकार वह जीवित को निर्जीव से, समीपस्थ को दूरस्थ से और विश्लेषण को समीक्षा से अधिक बल

www.neerajbooks.com